ARYAVART SHODH VIKASH PATRIKA
ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14 Vol-5, No.-II,PP-1-3, YEAR-Dec.2016

सांस्कृतिक सुरक्षा एवं शिक्षा

❑ डॉ0 राम कृष्ण उपाध्याय

"यदि इस धरती पर पुण्यभूमि कहलाने का अधिकारी कोई देश है, वह देश जहाँ मानवता, सज्जनता, सदाशयता, पवित्रता, शांति और सब से ऊपर अन्तरदर्शन और आध्यात्मिकता के शिखर पर पहुँची है– वह भारत है।"

–स्वामी विवेकानन्द

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वप्राचीन संस्कृति है। यह एक मात्र ऐसी संस्कृति है जिसने जीवन की समस्याओं को समग्रता के साथ देखा और समझा है और उनका हल खोजने का सतत प्रयास किया है। विज्ञान, दर्शन, धर्म मनोविज्ञान और सामाजिक जीवन को समन्वित रूप से देखने वाला यह विश्व इतिहास में अकेला प्रयास है। जैसा कि प्रख्यात इतिहासकार अर्नोल्ड टॉयनबी ने कहा है–

"भारतीय चिन्तन ही विश्व को वर्तमान संकट से उबार सकता है और मानव–समाज के भाव विकास के लिए सही दिशा दे सकता है।" इतनी समृद्ध संस्कृति और सुविकसित जीवन दर्शन के बावजूद आज हमारा राष्ट्र भीषण समस्याओं से जूझ रहा है। एक ओर हमारे युवकों में अनुशासन हीनता, हिंसा, नशाखोरी, कामिक दुर्बलता जैसी वृत्तियाँ पनप रही हैं। दूसरी ओर जनसंख्या विस्फोट, पर्यावरण प्रदूषण, सामाजिक विघटन, साम्प्रदायिक संघर्ष, धार्मिक असहिष्णुता, नैतिक गिरावट, भ्रष्टाचार आदि समस्यायें विकराल रूप धारण किए हुए हैं। ऐसा परिदृश्य देखकर सामान्यतः लोगों में निराशा घर करती जा रही है। बच्चें में अपने देश के प्रति लगाव कम हो रहा है। श्रद्धा और विश्वास का जीवन में कोई स्थान दिखाई नहीं देता। पाश्चात्य देशों की ओर उनकी रूझान बढ़ रही है। शिक्षित लोगों को भी लगता है कि सारा ज्ञान और विज्ञान पाश्चात्य देशों से आया है। ऊँचे–ऊँचे पदों पर बैठे लोग भी हर समस्या का सतही और तात्कालिक हल ढूँढने लगते है और पाश्चात्य शैली में उन्हें प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं जो हमारी प्रकृति से कदापि मेल नहीं खाता। यह सच है उक्त विकराल समस्याओं का हल हमें खोजना ही है। हो सकता है लम्बें संघर्ष और दासता की दीर्घ अवधि में हमें अपने 'स्व' का विस्मरण हो गया। इसीलिए हमें लगता है कि इन समस्याओं का हल हमारे पास नहीं है और हम निराश हो जाते हैं। जबकि हमें अपने पूर्वजों से ज्ञान विरासत में मिला है वह विश्व के समस्त ज्ञान में बेजोड़ है। मगर दुर्भाग्य की बात यह है कि आज की शिक्षा वास्तव में आज भी मैकाले और मार्म्स–नीति पर ही चल रही है जो अपने देश की प्रकृति के अनुकूल नहीं है। आजादी के बाद आवाज तो बार–बार उठी

ऐसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष अर्थषास्त्र विभाग, कुँवर सिंह पी0जी0 कॉलेज, बलिया, मो0– 9415254742
ईमेल– dr.ramkrishna1975@gmail.com

ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14

शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन की। समितियाँ और आयोग भी गठित हुए। उनके लम्बे–चौड़े प्रतिवेदन पुस्तकालयों की शोभा बढ़ा रहे हैं। किन्तु शिक्षा आज भी अपने धरती से कटी हुई है, परिणामतः शिक्षा प्राप्त करने वाले भी अपनी धरती की गंध नहीं पाते।

उक्त स्थिति के विचारोपरांत हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि शिक्षा को पुस्तकीय पठन–पाठन से थोड़ा बाहर लाकर संस्कारों से जोड़ने का प्रयास किया जाए। परिवारों, विद्यालयों तथा अन्यान्य संसाधनों में संस्कारक्षम वातावरण बनाने का प्रयास किया जाए। संस्कार देने के लिए अपनी संस्कृति के उज्जवल पृष्ठों को पलटना पड़ेगा। वेद, उपनिषद, दर्शन, पुराण और स्मृतियों की वैज्ञानिक शब्दावली में व्याख्या प्रस्तुत करते हुए आधुनिक सन्दर्भों से उन्हें जोड़ना होगा। उक्त समस्त ग्रन्थ भारत ही नहीं वैश्विक ज्ञान के आधार स्तभ है। अतः भारतीय संस्कृति के संबंध में जानकारी प्रस्तुत करना समय की आवश्यकता है।

सबसे पहले अपने देश के प्रति फैली कुछ भ्रान्तियों को दूर करने का प्रयास करना होगा। हमारा देश भारत है, भारत और कुछ नहीं। इसी नाम से हमें अपनी पहचान मिलती है। इसी नाम से हम अपने पूर्वजों से जुड़ते हैं। भारत नाम हमारी धमनियों में प्रवाहित रक्त की ऊष्मा का अनुभव कराता है। हमें अपने इस नाम की सार्थकता समझना चाहिए ज्ञान में रत (भा अर्थात् प्रकाश या ज्ञान और रत अर्थात् लीन) भारत अर्थात् ज्ञान मुमुक्षु। इसी धरती पर ज्ञान का आदि स्रोत वेद अवतरित हुए। धन–धान्य से भरी–पूरी यह धरती, विश्व की समस्त प्रकार की ऋतुओं, भूरचनाओं, जलवायु, वनस्पतियों, खनिजों, औषधियों, फल–फूल, खनिजों भोज्य पदार्थों से संपन्न यह धरती पुत्रवत् हमारा पालन–पोषण करती है अतः यह माँ है। यहाँ किसी चीज का अभाव नहीं था इसलिए विश्व गुरू बना। इसलिए आज हम अपने नाम को पुनः सार्थक करने का संकल्प ले सकते हैं।

काल चक्र में हमारी परिस्थितियाँ बदलीं। अपनी वैभव संपन्नता के कारण हम दूसरों की आँख में खटकने लगे, उन्होंने हमें समाप्त कर स्वयं समष्द्ध बनने का प्रयास किया। हमने निरन्तर संघर्ष किए और अपने अस्तित्व को मिटने नहीं दिया। जबकि उसी काल के यूनान, मिश्र और रोम आदि मिट गए। हममें कुछ ऐसी बात अवश्य रही जिसने हमारे अस्तित्व को बनाए रखा। वह बात थी, हमारे विचार, हमारा जीवन दर्शन, हमारी संस्कृति। यूनान, मिश्र और रोम आज भी विश्व मानचित्र पर विद्यमान है किंतु अपने जीने की विशेषता खो दी अतः उन्हें मिटा हुआ कहा गया। यहूदी जाति अपनी धरती से विलग होकर हजारों वर्षों तक इधर–उधर घूमती रही किंतु उसने अपने अंतःकरण में अपनी अस्मिता की स्फुलिंग निरंतर जीवित रक्खी और बराबर संघर्ष करती रही। समय आने पर उसने अपनी खोईधरती पुनः प्राप्त कर ली और अपना विशिष्ट जीवनतंत्र प्रारंभ कर दिया। इसलिए हमें कभी भी निराशा का कोई कारण नहीं है। हम तो आशावादी संस्कृति के पुत्र हैं।

भारत विश्व के प्राचीनतम् राष्ट्रों में से एक है। सांस्कृतिक दृष्टि से यह अति समृद्ध रहा है। विश्व की अन्यान्य संस्कृतियों में इसने अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित की है। कहने के लिए पाश्चात्य

ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14

विद्वानों ने अनेक दषष्टियों से उसकी आलोचनायें की किंतु उनकी आलोचनायें निष्पक्ष नहीं थी वरन् विद्वेष और भ्रान्तियों पर आधारित थीं। इन आलोचनाओं के बावजूद वे अनुभूत सत्य को नकार नहीं सके। मैक्समूलर जैसे विद्वान भारत आए वर्षो संस्कृत व अध्ययन किया और वेदों पर भाष्य लिखा। कीथ, पॉल्डयूसन, बर्ट्रेन्ड रसल, शॉपेनहॉवर आदि विद्वानों ने वेद, उपनिषद, गीता, दर्शन विशेषकर वेदान्त का गहन अध्ययन किया तथा भाष्य लिखे। **मैक्समूलर** स्वयं स्वीकार करते हैं–

"मैनें वेदान्त साहित्य को पढ़ने में अन्यंत सुखद समय व्यतीत किया है। वे प्रातः कालीन निर्मल प्रकाश की भांति तथा पर्वतीय स्वच्छ की तरह हैं। वे कितने पवित्र और सत्य हैं।"

बर्ट्रेन्ड सरल का कहना है–

"विश्व के सारे दर्शन गीता में समाहित हैं।"

हेमिल्टन का कहना है– "दुनिया से यदि इग्लैड को खत्म करते तो व्यापार खत्म होता, अमेरिका को खत्म करते तो राजनीति खत्म हो जाती, इस्लाम और इसाई को खत्म करते तो साम्प्रदायिक विष खत्म होता परन्तु यदि भारत को खत्म कर दें तो दुनिया से धर्म, आस्था, श्रद्धा और नैतिकता खत्म हो जाएगी।"

पश्चिमी विद्वान दार्शनिकों के उक्त कथन भारत के ज्ञान भण्डार की प्रशंसा करते हुए उनकी महत्ता दर्शाते हैं।

भारत का ज्ञान भण्डार वेदों, उपनिषदों, पुराणों, स्मृतियों, रामायण, महाभारत–गीता जैनागम, त्रिपिटक, और गुरूग्रंथ तथा दर्शन ग्रन्थों के रूप में आज तक सुरक्षित है। इस ज्ञान को ग्रहण करना विदेशों के अनेक अध्येता अपना सौभाग्य मानते थे और अध्ययन के लिए भारत आते रहे हैं।

प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रवाह में कभी–कभी अवरोध या ठहराव भी आते रहे हैं। इन अवरोधों और ठहरावों को दूर कर संस्कृति की पवित्र धारा को अक्षुण्य बनाए रखने के प्रयास भी बराबर होते रहे हैं, तथा संस्कृति के शाश्वत आधार को तत्कालीन सन्दर्भों में व्याख्यायित किया जाता रहा है। इसके कारण कुछ छूटा है और कुछ नया जुड़ा है, यह किसी भी संस्कृति की जीवन्तता का प्रतीक है। उदाहरण के लिए प्राचीन काल में जब यज्ञ में पशुबलि की प्रथा बढ़ गई तो अंहिसा को जीवन दर्शन के रूप में प्रस्तुत करने वाले भगवान महावीर अवतरित हुए इन विचारों को जन सामान्य तक पहुँचाने के लिए, जो लोग जुटे उनके संप्रदाय को जैन कहा गया। अहिंसा, करूणा और जीवों पर दया का संदेश देने वाले भगवान बुद्ध आए उनके अनुयायिओं को बौद्ध कहा गया। बौद्ध धर्म में भी अनेक मत– मातान्तर उभरने लगे उस अवरोध को शंकराचार्य ने दूर करने का प्रयास किए। वास्तव में यह तो संस्कृति के परिमार्जन का कार्य है।

विद्वानों के मध्य चलने वाली अकादमिक चर्चाओं में आर्य बाहर से आए, द्रविड़ भारत के मूल निवासी थे पारसी भी यहाँ आकर बसे, मुसलमान और ईसाई भी बाहर से आकर यहाँ बसे अतः इन सभी जातियों की संस्कृतियों का मिश्रण भारतीय संस्कृति है। जिसे गंगा जमुनी संस्कृति के नाम से भी जाना जाता है। इसके लिए कम्पोजिट कल्चर या प्लूरिस्टिक कल्चर जैसे शब्दों को भी प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक देश की संस्कृति की

ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14

अपनी कुछ विशेषताऐं उसकी अपनी पहचान बनाती हैं। जिस देश ने अपनी वे विशेषताऐं खो दीं उसकी पहचान ही खो गई यह तो विश्व इतिहास का एक तथ्यात्मक पृष्ठ है। वेद कब रचे गए, किसने लिखे यह अज्ञात ही है क्योंकि उन पर किसी का नाम नहीं है। लिखने वाले द्रविण थे या आर्य यह भी नहीं मालूम। हमारे ऋषियों, मनीषियों और द्रष्टाओं ने स्वाध्याय, ध्यान तथा सूक्ष्म निरीक्षणों एवं प्रयोगों द्वारा जीवन के आधारभूत सिद्धांतों को लयात्मक ध्वनि से उच्चारित किया और शिष्य प्रणाली में श्रवण विधि से वे अवतरित होते रहे इसीलिए वेदों को श्रुति भी कहते हैं। इन्हीं वेदों से ज्ञान–विज्ञान के अन्यान्य आयाम विकसित किए गए। अपनी सूक्ष्म अनुभूतियों को मूर्तरूप में भी अभिव्यक्त किया गया। इस अन्तरानुभूति और बाह्य अभिव्यक्ति को ही संस्कृति नाम दिया गया। अतः संस्कृति का अपना एक प्रवाह है, यह गंगा की पवित्र धारा के समान है जिसमें अनेक नदियाँ आकर गिरती हैं मगर गंगा–गंगा ही रहती है वह जमुना गंगा, गंडक गंगा या गोमती गंगा तो नहीं कही जाती। अतः हमें एक निष्कर्ष निकालना चाहिए, हमारा देश भारत है, यहां बसने वाला, इसे मातृवत् स्वीकारने वाला हर नागरिक भारतीय है वह किसी पंथ को स्वीकारने वाला हो, किसी भाषा को बोलने वाला हो, किसी प्रदेश का रहने वाला हो उसका पहनावा ओढावा, खान–पान कुछ भी हो, वह भारतीय है। यह विचार, यह भाव उसे अनुभव कर आत्मसात करना चाहिए। अनेकता में एकता तो भारतीय संस्कृति की मौलिक विशेषता है।

यह भी ऐतिहासिक सत्य है कि इस देश में मूल रूप से रहने वाले लोगों ने तो अपने चिंतन, आचार–विचार से भारतीय संस्कृति और सभ्यता का विकास किया। देश के बाहर से आक्रमणकारी युद्ध करके आए, शरण लेने के लिए आए, व्यापार करने आए, अथवा संबंधों को बढ़ाने हेतु अन्य देशां से आए लोगों ने यहां का बहुत कुछ नष्ट करने का प्रयास भी किया और बहुत कुछ इसमें जोड़ा भी, शक और हूण जैसी अनके बर्बर जातियाँ लड़ती हुई आई, धीरे–धीरे वे मूल के साथ समाहित हो गई। यूनान से आक्रमणकारी आए, युद्ध हुए, उन्होंने हमारी संस्कृति पर अपनी कुछ छाप छोड़ी मगर आज यहाँ यूनानी नाम से नहीं रहते। अपने देश से भगाए जाने पर पारसी यहां आए और भारतीय समाज के साथ समरस होकर रहने लगे। तुर्क, अफगान, ईसाई और मुसलमान भी भारत आए। उन्होंने भारतीय संस्कृति को बहुत अंशों में प्रभावित किया। भारतीय सभ्यता के विकास में उनका योगदान माना जा सकता है। अगर आज यहाँ रहने वाले पारसी, मुसलमान और ईसाई भारतीय हैं तो भारत की संस्कृति कम्पोजिट, गंगा–जमुनी या प्लूरिस्टिक नहीं कही जानी चाहिए, वह रहेगी एक ही और वह भी भारतीय संस्कृति। जिसे काल में जिस स्थान पर जिसका योगदान होगा वहां उनका उल्लेख अपेक्षित है। जैन, बौद्ध, सिक्ख, कबीर पंथी, सनातनी, शैव, वैष्णव, आर्य समाजी, आदि–आदि अनेक विचार धाराऐं, उपासना पद्धतियाँ और आन्दोलन इसी भूमि से उपजे अतः उन्होंने प्रचलित जीवन पद्धति, सामाजिक संरचना और उपासना विधियों को दिशा देने एवं गति प्रदान करने का ही कार्य किया।

वास्तव में भारतीय संस्कृति का सार उपनिषद के इस श्लोक में निहित–

ISSN No. 2347-2944,RNI TITLED No. UPBIL04292
RNI REG. No. UPBIL/2014/66218, SOCLREG. No. 561/2013-14

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च च जगत्यां जगत।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गधः कस्य स्विद धनम।।
यह प्रथम उपनिषद ईशावास्योंपनिषद् का प्रथम श्लोक है। यह भारतीय संस्कृति के सार तत्व को प्रस्तुत करता है। इसका अर्थ है जो कुछ भी इस संपूर्ण जगत में है वह सब कुछ ईश्वर से व्याप्त है। इसका उपभोग जितना आवश्यक हो त्याग पूर्वक करते रहो इसमें आसक्त न हो क्योंकि यह किसी का नहीं है।

हमारी प्रत्येक पीढ़ी अपनी संस्कृति का समुचित ज्ञान प्राप्त करे, जीवन में सनातन मूल्यों को अपनाएं, उसी आधार पर अपने चरित्र और व्यक्तित्व का गठन करे, अपने प्रत्येक आचार–विचार से भारतीय होना प्रस्तुत करे, ऐसा प्रयास देश के प्रत्येक उत्तरदायी और समझदार व्यक्ति को करना ही होगा। यह कार्य मुख्यतः शिक्षा के माध्यम से सम्पन्न होना चाहिए। शिक्षा संस्कृति की प्रमुख संवाहिका है। शिक्षा को अपने देश की संस्कृति पर ही आधारित होना चाहिए तथा बच्चों में संस्कृति बोध विकसित करते रहने का निरंतर प्रयास करना चाहिए।

आज सांस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर चलने वाले कार्यक्रमों की भी दिशा बदलनी पड़ेगी। उनमें अपनी संस्कृति के तत्वों को प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

परिवारों के वातावरण, घर के रख–रखाव, परस्पर संबंध, वार्तालाप और व्यवहार, घर की साज–सज्जा अतिथियों के स्वागत, बच्चों के संस्कार, पर्वो के सम्पन्न करने, रीति–रिवाज एवं परम्पराओं के परिपालन आदि सभी बातों में भारतीय संस्कृति का वैशिष्टय परिलक्षित होना चाहिए। आकाशवाणी, दूरदर्शन, चलचित्र तथा प्रेस के माध्यम से आज जिस प्रकार की सामग्री का प्रचार–प्रसार हो रहा है वह बच्चों को गलत दिशा में ले जाने का ही कार्य कर रहा है। उनमें पाश्चात्य सामाजिक मूल्यों का समावेश अधिक दिखाई देता है। इन शैक्षिक साधनों की दिशा भी बच्चों में भारतीयता के संस्कार देने का कार्य कर सके ऐसा प्रयास करना होगा, अन्यथा एक स्थान पर दिए जोने वाले संस्कार अधिक स्थायित्व नहीं ले सकेंगे।

इन सभी साधनों के अतिरिक्त विद्यालयों को सर्व महत्व की भूमिका निभानी है। उन्हें सभी विषयों के प्रचलित पाठयक्रमों में पर्याप्त संशोधन करना होगा। छोटी कक्षाओं में भाषा, गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल आदि विषयों में भारत की उपलब्धियों का समावेश करना चाहिए। अपने प्राचीन गौरव की उन्हें जानकारी दी जाए। उनके स्वाभिमान को विकसित किया जाए। जब हम उन्हें अपने महापुरूषों द्वारा वैज्ञानिक खोजों, वीरता से अपनी मातृभूमि की रक्षा करने, समाज की उन्नति के लिए किए गए त्याग, उनके ज्ञान और आध्यात्मिक उपलब्धियों की गाथाएं बच्चों को बताएंगे तो निश्चित रूप से वे अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान का भाव और देश के प्रति गौरव की भावना संजो सकेंगे। बच्चों में भारतीय जीवन–मूल्यों के चरित्र का विकास करने का प्रयास किया जाए। शिक्षा मूल्याधारित होनी चाहिए। भारतीय संस्कृति एवं जीवन दर्शन को आधार बनाकर पाठयक्रम बनाने की आवश्यकता है।

ऐसे ही धीरे–धीरे उन्हें भारतीय कला, नाटयशास्त्र, भूगर्भ शास्त्र, वास्तुविज्ञान, सैन्यविज्ञान, संगीत, शिल्प, व्यापार, नक्षत्रविज्ञान, ज्योतिष विज्ञान,

गणित क्षेत्रों की जानकरी दी जानी चाहिए। क्योंकि भारतीय मनीषियों ने ज्ञान का कोई भी आयाम अछूता नहीं छोड़ा बच्चों के लिए रोचक, सरल, वैज्ञानिक भाषा में छोटी–छोटी पुस्तकों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का ज्ञान दिया जा सकता है।

परिवार और विद्यालय के परिवेश तथा माता–पिता एवं शिक्षक के व्यवहार भी भारतीय मूल्यों के अनुकूल दिखाई देने चाहिए। बालकों के चरित्र निर्माण में जीने की कला का महत्वपूर्ण योगदान होता है। उन्हें सरल, स्वाभाविक जीवन जीने की आदत डालनी होगी। जीवन में बनावटी असत्य और अस्वाभाविक कुछ भी न हो। हमारी सोच सकारात्मक हो। उपर्युक्त कुछ विचार बिन्दु भारतीय संस्कृति को शिक्षा में प्रतिष्ठित करने में सहायोगी सिद्ध हो सकते हैं। अतएव भारतीय संस्कृति को शिक्षा मे भारतीयता के द्वारा ही संरक्षित/सुरक्षित किये जाने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची–

1. शिक्षा दशा एवं दिशा– आई0एस0 अस्थाना, अकादमिक एम्सेलेन्स, दिल्ली–31 ।
2. शिक्षा का आदर्श– स्वामी विवेकानन्द, सम्पादन एवं अनुवाद स्वामी विदेहत्मानन्द– राम कृष्ण मठ, नागपुर।
3. सर्वोदय दर्शन– दादा धर्माधिकारी– सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी– 221001 ।
4. मेरे सपनों का भारत– मोहन दास करमचन्द गॉधी–सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी – 221001 ।
5. हिन्दुत्व– डॉ0 मोहन राव भागवत– सुरूचित प्रकाशन– केशव कुंज, झंडेवाला, नई दिल्ली –110055 ।
6. शिक्षा एवं विद्या– ब्रम्हावर्चस– अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा ।
7. पूर्वा –संवाद– प्रो0 ओ0पी0 तिवारी– विश्व संवाद केन्द्र, कमल आफसेट पिंटर्स, दुर्गावडी, गोरखपुर।